मेघ आए

–सर्वेश्वर दयाल सक्सेना

कवि परिचय

जीवन परिचय–प्रसिद्ध साहित्यकार सर्वेश्वर दयाल सक्सेना का जन्म उत्तर प्रदेश के बस्ती जिले में सन् 1927 में हुआ था। इन्होंने प्रारंभिक शिक्षा बस्ती जिले से तथा उच्च शिक्षा इलाहाबाद विश्वविद्यालय से ग्रहण की। उन्हें आजीविका के लिए काफी संघर्ष करना पड़ा। बाद में अध्यापन कार्य से जुड़े। वे दिनमान के उपसंपादक तथा बाल पत्रिका पराग के संपादक भी रहे। उनका 1983 में आकस्मिक निधन हो गया।

रचना परिचय–सर्वेश्वर दयाल सक्सेना ने हिंदी काव्य और गद्य दोनों विधाओं पर अपनी लेखनी चलाई। उनकी रचनाएँ निम्नलिखित हैं–

काव्य रचनाएँ–काठ की घंटियाँ, बाँस का पुल, एक सूनी नाव, गर्म हवाएँ, कुआनो नदी, जंगल का दर्द, खूँटियों पर टँगे लोग।

अन्य कृतियाँ–अनेक नाटक, कहानियाँ एवं उपन्यास।

साहित्यिक विशेषताएँ–सर्वेश्वर दयाल सक्सेना के काव्य में ग्रामीण संवेदना के साथ शहरी मध्यमवर्गीय जीवनबोध भी व्यक्त हुआ है। वे सौंदर्य, श्रृंगार के कवि होने के अलावा प्रकृति प्रेमी भी थे। उन्होंने प्रकृति का सजीव चित्रण किया है। काव्य में उनकी कल्पनाशक्ति का विस्तार देखते ही बनता है।

भाषा-शैली–सर्वेश्वर दयाल की भाषा सहज एवं लोकजीवन की महक लिए हुए है। उनकी भाषा में चित्रात्मकता है। उनकी कविता में काल्पनिकता के दुर्लभ चित्र मिलते हैं। उनकी कृतियों में उपमा, रूपक और मानवीकरण अलंकारों का अधिकारपूर्ण उपयोग मिलता है।

कविता परिचय

'मेघ आए' कविता में कवि ने बादलों के आगमन की तुलना सज-धजकर आने वाले शहरी मेहमान से की है। ग्रामीण संस्कृति में दामाद के आने पर उल्लास का जो वातावरण बनता है उसी उल्लास को मेघरूपी शहरी मेहमान के आने पर दिखाया गया है। एक साल बाद आए इस मेहमान को देखकर एक ओर स्वागत-सत्कार तथा उल्लास का वातावरण है वहीं दूसरी ओर लंबे समयोपरांत आने के कारण शिकायतें भी हैं।

शब्दार्थ, भावार्थ एवं अर्थग्रहण संबंधी प्रश्न

① *मेघ आए बड़े बन-ठन के सँवर के।*
आगे-आगे नाचती-गाती बयार चली,
दरवाज़े-खिड़कियाँ खुलने लगीं गली-गली,

पाहुन ज्यों आए हों गाँव में शहर के।

मेघ आए बड़े बन-ठन के सँवर के। (पृष्ठ 127)

शब्दार्थ—**बन ठनकर**—सज-सँवरकर। **बयार**—हवा। **पाहुन**—मेहमान।

भावार्थ—कवि बादलों को शहरी मेहमान के रूप में चित्रित करते हुए कहता है कि बादल सज-धजकर आए हैं। उनके आगे-आगे चलती हुई अर्थात् अगवानी करती हुई शीतल हवा बहने लगी। इस शहरी मेहमान को देखने के लिए गली में दरवाजे और खिड़कियाँ खुलने लगीं। वर्षा ऋतु में आकाश में काले-काले बादल घिर आए हैं। जिन्हें देखकर लगता है कि गाँव में कोई शहरी मेहमान (दामाद) आया हुआ है। अर्थात् बादल सज-धजकर शहरी मेहमान की तरह आए हुए हैं।

अति लघुउत्तरीय प्रश्न

(*i*) कवि एवं कविता का नाम लिखिए। 1

(*ii*) मेघ गाँव में किस प्रकार आए? 1

(*iii*) मेघ के आगे-आगे कौन चल रहा/रही है? 1

(*iv*) मेघ के आने से गाँव का वातावरण कैसा हो गया? 1

(*v*) काव्यांश में किस-किसका मानवीकरण किया गया है? 1

उत्तर

(*i*) **कवि का नाम**—सर्वेश्वर दयाल सक्सेना।

कविता का नाम—मेघ आए।

(*ii*) मेघ गाँव में शहरी मेहमान (दामाद) की तरह सज-धजकर आए।

(*iii*) मेघ के आगमन की सूचना देने उनके आगे-आगे बयार (हवा) प्रसन्नतापूर्वक चल रही है।

(*iv*) मेघ के आने से गाँव का वातावरण उल्लासमय हो गया। लोग दरवाजे-खिड़कियाँ खोलकर मेघ को देखने लगे।

(*v*) काव्यांश में बादल और हवा का मानवीकरण किया गया है।

लघुउत्तरीय प्रश्न

(*i*) गाँव में मेघ का स्वागत किस प्रकार किया जाता है और क्यों? 2

(*ii*) गाँव में मेघ के आने पर दरवाजे खिड़कियाँ क्यों खुलने लगीं? 1

(*iii*) 'पाहुन ज्यों आए हो गाँव में शहर के' का आशय स्पष्ट कीजिए। 2

उत्तर

(*i*) गाँव में मेघ का स्वागत मेहमान (दामाद) की तरह किया जाता है, क्योंकि गाँव में वर्षा लाने वाले मेघों का बहुत महत्त्व है। जैसे मेहमान के आने से घर के लोग हर्षित हो उठते हैं वैसे ही गाँव के लोग उमड़ते-घुमड़ते बादलों को देख हर्षित हो जाते हैं।

(*ii*) गाँव में मेघ के आने पर दरवाजे-खिड़कियाँ इसलिए खुलने लगीं ताकि महिलाएँ मेघ रूपी मेहमान को देख सकें।

(*iii*) ग्रामीण जीवन पूरी तरह से कृषि पर आश्रित होता है। कृषि कार्य वर्षा होने पर ही आरंभ होता है। गाँव के लोग उसी प्रकार बादलों के आने के प्रति उत्सुक रहते हैं, जैसे शहरी दामाद के आने के प्रति उत्सुकता दिखाते हैं।

② *पेड़ झुक झाँकने लगे गरदन उचकाए,*

आँधी चली, धूल भागी घाघरा उठाए,

बाँकी चितवन उठा, नदी ठिठकी, घूँघट सरके।

मेघ आए बड़े बन-ठन के सँवर के। (पृष्ठ 127)

शब्दार्थ–**उचकाए**–उठाकर, ऊँची किए हुए। **चितवन**–तिरछी नजर। **ठिठकी**–हैरान होकर रुकी। **सरके**–खिसक गए।

भावार्थ–मेहमान के रूप में आए बादल को पेड़ गरदन ऊँची करके देखने लगे। आँधी चलने से धूल उड़ने लगी। जिसे देखकर ऐसा लगता है कि जैसे कोई लड़की अपना घाघरा उठाए भाग रही है। नदी ठिठककर मेहमान को यूँ देखने लगी जैसे गाँव की कोई स्त्री तिरछी नजर से मेहमान को देखती है। ऐसा करते हुए वह अपने घूँघट को उठाकर लज्जा के कारण तिरछी निगाह से देख रही है।

अति लघुउत्तरीय प्रश्न

(*i*) पेड़ क्यों झुकने लगे? 1

(*ii*) मेघ के आने पर धूल पर क्या प्रभाव पड़ा? 1

(*iii*) किसके घूँघट सरके और क्यों? 1

(*iv*) काव्यांश में किसका-किसका मानवीकरण किया गया है? 1

(*v*) काव्यांश की भाषागत विशेषता लिखिए। 1

उत्तर

(*i*) पेड़, मेघ रूपी मेहमान को देखने के लिए तेज हवा की वजह से झुकने लगे।

(*ii*) मेघ के आने पर आँधी के प्रभाव से धूल उसी तरह भागने लगी, जैसे ग्रामीण बाला घाघरा उठाए भाग रही हो।

(*iii*) नदी रूपी ग्रामीण स्त्री के घूँघट सरके ताकि वह तिरछी नजर से मेघ रूपी मेहमान को देख सके।

(*iv*) काव्यांश में पेड़, धूल, नदी और मेघ का मानवीकरण किया गया है।

(*v*) काव्यांश की भाषा सरल, सहज तथा चित्रात्मक है।

लघुउत्तरीय प्रश्न

(*i*) पेड़ बार-बार गरदन उचकाते हुए क्यों झुक रहे थे? 2

(*ii*) मेघ के आने से प्रकृति में जो परिवर्तन हुए उन्हें लिखिए। 2

(*iii*) मेघ गाँव में किस प्रकार आए? 1

उत्तर

(*i*) मेघ आने के पहले तेज हवा बहने लगी। हवा के कारण वे कभी झुक जाते थे तो कभी उठ खड़े होते थे। ऐसा लगता था कि वे खुश होकर मेघ रूपी मेहमान को देखने के प्रयास में गरदन उचकाते हुए झुक रहे हैं।

(*ii*) मेघ आने से प्रकृति में अनेक परिवर्तन हुए, जैसे–

(क) आँधी चलने लगी।

(ख) गलियों में धूल उड़ने लगी।

(ग) पेड़ झूमने लगे।

(घ) नदी की लहरों में ठहराव आ गया।

(*iii*) गाँव में मेघ सज-धजकर शहरी मेहमान की तरह आए।

③

बूढ़े पीपल ने आगे बढ़कर जुहार की,
'बरस बाद सुधि लीन्हीं'–
बोली अकुलाई लता ओट हो किवार की,
हरसाया ताल लाया पानी परात भर के।
मेघ आए बड़े बन-ठन के सँवर के। (पृष्ठ 127)

शब्दार्थ–**जुहार की**–आदरपूर्वक नमस्कार किया। **सुधि**–याद। **अकुलाई**–व्याकुल। **ओट होना**–छिपना। **किवार**–दरवाजा। **हरसाया**–प्रसन्न हुआ। **ताल**–तालाब। **परात**–एक बड़ा-सा बर्तन।

भावार्थ–मेहमान रूप में आए बादल को देखकर पीपल ने आगे बढ़कर मेहमान का स्वागत किया। साल भर से बादल रूपी पति से मिलन न हो पाने से व्याकुल लता दरवाजे की ओट में होकर बोली, तुम्हें पूरे एक साल बाद मेरी याद आई है। मेघ रूपी मेहमान को देख तालाब प्रसन्न हो उठा और परात में पानी भर लाया ताकि मेहमान के पैर धो सके। इस तरह मेघ सज-धजकर आए।

अति लघुउत्तरीय प्रश्न

(*i*) मेघ के आने पर बूढ़े पीपल ने क्या किया? 1

(*ii*) लता ने बरस बाद आने की बात क्यों कही? 1

(*iii*) बूढ़ा पीपल और लता किनके प्रतीक हैं? 1

(*iv*) तालाब ने अपनी प्रसन्नता कैसे प्रकट की? 1

(*v*) काव्यांश से अनुप्रास एवं मानवीकरण अलंकार का एक-एक उदाहरण लिखिए। 1

उत्तर

(*i*) मेघ के आने पर बूढ़े पीपल ने घर के बुजुर्ग की भाँति मेघ रूपी मेहमान का स्वागत किया।

(*ii*) लता ने बरस बाद आने की बात इसलिए कही क्योंकि मेघ रूपी मेहमान पूरे एक साल बाद आया था। अर्थात् वर्षा ऋतु के बादल एक साल बाद आते हैं।

(*iii*) बूढ़ा पीपल घर के बुजुर्ग व्यक्ति का तथा लता 'नवविवाहिता' स्त्री का प्रतीक है।

(*iv*) तालाब ने मेहमान के चरण धुलने के लिए थाल में पानी लाकर अपनी प्रसन्नता प्रकट की।

(*v*) अनुप्रास अलंकार–'पानी परात भर के'।
मानवीकरण अलंकार–'बोली अकुलाई लता ओट हो किवार की'।

लघुउत्तरीय प्रश्न

1. पीपल को किस रूप में चित्रित किया गया है? उसने मेघ का स्वागत कैसे किया? 1
2. व्याकुल लता ने मेघ से क्या शिकायत की और क्यों? 2
3. लता और तालाब ने भारतीय संस्कृति की परंपराओं का पालन किस रूप में किया, स्पष्ट कीजिए। 2

उत्तर

1. पीपल को घर के वरिष्ठ (बुजुर्ग) सदस्य के रूप में चित्रित किया गया है। उसने आगे बढ़कर, हाथ जोड़ते हुए मेघ रूपी मेहमान का स्वागत किया।
2. इन पंक्तियों में अकुलाई लता नवविवाहिता है जो मेघ रूपी पति से अलग हो विरह व्यथा झेल रही थी। उसने शिकायत करते हुए साल भर बाद सुधि लेने की बात कही, क्योंकि मेघ रूपी मेहमान उसे यहाँ छोड़कर साल भर बाद आया है।
3. लता और तालाब ने भारतीय संस्कृति की परंपराओं का पालन निम्न रूप में किया–

   (*i*) लता (नवविवाहिता) ने घर के बड़े-बूढ़ों की उपस्थिति में मेघ रूपी अपने पति से किवाड़ की ओट से बात की।

   (*ii*) मेघ रूपी मेहमान के पैर धुलवाने के लिए तालाब (घर का सदस्य) खुशी-खुशी परात में पानी भर लाया।

④ *क्षितिज अटारी गहराई दामिनी दमकी,*
'क्षमा करो गाँठ खुल गई अब भरम की',

बाँध टूटा झर-झर मिलन के अश्रु ढरके।

मेघ आए बड़े बन-ठन के सँवर के। (पृष्ठ 127)

शब्दार्थ–**क्षितिज**–वह काल्पनिक स्थान जहाँ धरती और आकाश मिलते हुए प्रतीत होते हैं। **अटारी**–अट्टालिका। **गहराई**–छा गई। **दामिनि**–बिजली। **भरम**–भ्रम, संशय। **अश्रु**–आँसू। **ढरके**–गिर पड़े।

भावार्थ–आकाश में घिरते बादलों को देखकर कवि कहता है कि क्षितिज रूपी अट्टालिका पर बादल गहराते जा रहे हैं। घने-घने बादलों में बिजली चमकने लगी। लोगों के मन में समाया भ्रम धीरे-धीरे हटने लगा। उन्हें लगा कि अब बादल जरूर बरसेंगे। अटारी पर खड़ी नायिका के मन से भी भ्रम मिट गया। उसने अपने मन में उमड़े संदेह के लिए मेहमान से क्षमा माँगी। यह देख मेहमान की आँखों से प्रसन्नता के आँसू गिरने लगे अर्थात् वर्षा होने लगी। इस तरह बादल सज-सँवरकर गाँव में आए।

अति लघुउत्तरीय प्रश्न

(*i*) बिजली कहाँ चमकने लगी और क्यों? 1

(*ii*) यहाँ किस भ्रम की बात कही गई है? 1

(*iii*) 'मिलन' के अश्रु ढरके का क्या आशय है? 1

(*iv*) काव्यांश में कौन-कौन से अलंकार हैं? 1

(*v*) इन पंक्तियों में कौन-सा बिंब उपस्थित है? 1

उत्तर

(*i*) बिजली क्षितिज रूपी अटारी पर चमकने लगी क्योंकि वहाँ बहुत से बादल एकत्र हो गए थे।

(*ii*) यहाँ उस भ्रम की बात कही गई जो ग्रामीणों तथा लता के मन में पैदा हो गया था कि इस साल मेघ शायद न आएँ।

(*iii*) क्षितिज रूपी अटारी पर जब व्याकुल लता का उसके प्रेमी मेघ से मिलन हुआ तो उनके धैर्य का बाँध टूट पड़ा और उनकी आँखों से खुशी के आँसू ढरक पड़े।

(*iv*) काव्यांश में मानवीकरण अलंकार, पुनरुक्तिप्रकाश तथा अनुप्रास अलंकार हैं।

(*v*) इन पंक्तियों में दृश्य बिंब उपस्थित है।

लघुउत्तरीय प्रश्न

1. मेघ आने से क्षितिज रूपी अटारी पर क्या परिवर्तन हुआ? 1
2. यहाँ किस भ्रम की बात की गयी है? यह भ्रम कैसे दूर हुआ? 2
3. काव्यांश में किस बाँध के टूटने की बात कही गई है और उसका क्या परिणाम हुआ? 2

उत्तर

1. मेघ आने से क्षितिज रूपी अटारी पर बादलों का समूह एकत्र हो गया और बिजली चमकने लगी।
2. मेघरूपी मेहमान के न आने से घर के सदस्य और लता वनस्पतियाँ दोनों ही दुखी थी। उन्हें यह भ्रम हो गया था कि मेघ (बादल) इस साल नहीं आएँगे। मेघ के यूँ आने से उनका भ्रम दूर हो गया।
3. काव्यांश के अनुसार क्षितिज रूपी अटारी पर मेघ और लता का मिलन हुआ। उनके सब्र का बाँध टूट गया। उनकी आँखों से खुशी के आँसू बह निकले अर्थात् बरसने लगे और लोग खुश हो गए।

प्रश्न–अभ्यास

(पाठ्यपुस्तक से)

1. बादलों के आने पर प्रकृति में जिन गतिशील क्रियाओं को कवि ने चित्रित किया है, उन्हें लिखिए।

उत्तर बादलों के आने पर प्रकृति में निम्नलिखित गतिशील क्रियाओं को कवि द्वारा चित्रित किया गया है–

(*i*) मेघ रूपी मेहमान के आने की सूचना देने के लिए बयार का नाचते-गाते आना।

(*ii*) पेड़ों द्वारा मेहमान को देखने के लिए गरदन ऊँची करना।

(*iii*) दरवाजे-खिड़कियों का खुलना।

(*iv*) आँधी का चलना और धूल का उड़ना।

(*v*) नदी का ठिठककर बाँकी नजर से देखना।

(*vi*) पीपल का झुककर मेहमान का स्वागत करना।

(*vii*) लताओं का पेड़ों में छिपना।

(*viii*) क्षितिज पर बिजली का चमकना।

(*ix*) तालाब द्वारा पानी भर कर लाना।

(*x*) जोरदार वर्षा का होना।

2. निम्नलिखित किसके प्रतीक हैं?

धूल, पेड़, नदी, लता, ताल

उत्तर
- धूल – किशोरी लड़की का जो मेहमान के आने की सूचना देने भाग रही है।
- पेड़ – गाँव के पुरुष।
- नदी – गाँव की विवाहिता औरतें।
- लता – नवविवाहिता, जो साल भर से पति का इंतजार कर रही थी।
- ताल – घर का सदस्य।

3. लता ने बादल रूपी मेहमान को किस तरह देखा और क्यों?

उत्तर लता ने बादल रूपी मेहमान को व्याकुल नवविवाहिता की भाँति देखा। उसके इस तरह देखने का कारण था कि बादल रूपी मेहमान पूरे एक साल बाद आया था। वह गर्मी (विरह वेदना) से व्याकुल थी साथ ही मानिनी भी थी इसलिए उससे अपनी नाराजगी प्रकट कर रही थी।

4. भाव स्पष्ट कीजिए–

(क) क्षमा करो गाँठ खुल गई अब भरम की

(ख) बाँकी चितवन उठा, नदी ठिठकी, घूँघट सरके।

उत्तर (क) **भाव**–लता रूपी नायिका मेघ रूपी मेहमान से क्षमा माँगते हुए कहने लगी–मुझे माफ करना क्योंकि एक साल तक तुम्हारे न आने का मेरे मन में भ्रम बन गया था।

अन्य भाव–वर्षा होने से व्याकुल ग्रामवासियों के मन का यह भ्रम मिट गया कि इस साल मेघ नहीं बरसेंगे।

(ख) **भाव**–नदी में उठती-गिरती लहरें देखकर लगता है कि नदी आने वाले मेघ रूपी मेहमान को घूँघट उठाकर तिरछी नजर से देख रही है।

अन्य भाव–गाँव की स्त्रियाँ आते मेहमान को देखने के लिए ठिठक गईं और घूँघट उठाकर तिरछी नजर से देखने लगीं।

5. मेघ रूपी मेहमान के आने से वातावरण में क्या परिवर्तन हुए?

उत्तर मेघ रूपी मेहमान के आने से वातावरण में निम्नलिखित परिवर्तन हुए–

(*i*) ठंडी हवाएँ चलने लगीं जो बढ़कर आँधी में बदल गईं।

(*ii*) गली में धूल उड़ने लगी।

(*iii*) ऊँचे पेड़ों की चोटियाँ तथा शाखाएँ झुकने-उठने लगीं।

(*iv*) लताएँ हवा में लहराने लगीं।

(*v*) क्षितिज पर बादल घिर आए।

(*vi*) बिजली चमकने लगी।

(*vii*) जोरदार वर्षा शुरू हो गई।

6. मेघों के लिए 'बन-ठन के, सँवर के' आने की बात क्यों कही गई है?

उत्तर बादल काले-काले घुँघराले होते हैं। इनकी सुंदरता देखते ही बनती है। बादलों के बीच कभी सतरंगी इंद्रधनुष दिखता है, जिससे बादलों का सौंदर्य बढ़ जाता है। बादलों के आगमन की सूचना देती या आगवानी करती हवा आई। बादल गाँव में सजे-धजे मेहमान के रूप में आए।

7. कविता में आए मानवीकरण तथा रूपक अलंकार के उदाहरण खोजकर लिखिए।

उत्तर

मानवीकरण अलंकार	रूपक अलंकार
• मेघ आए बड़े बन-ठन के सँवर के	• क्षितिज अटारी गहराई
• नाचती गाती बयार चली	• मिलन के अश्रु ढरके
• पेड़ झुक झाँकने लगे	
• धूल भागी घाघरा उठाए	
• बाकी चितवन उठी नदी ठिठकी	
• बूढ़े पीपल ने जुहार की	
• बोली अकुलाई लता	
• हरसाया ताल लाया पानी भर के	

8. कविता में जिन रीति-रिवाजों का मार्मिक चित्रण हुआ है, उसका वर्णन कीजिए।

उत्तर (*i*) मेहमान के आने पर खुशी छा जाना।

(*ii*) गाँववालों द्वारा मेहमान को उत्सुकतापूर्वक देखना।

(*iii*) बड़ों-बूढ़ों द्वारा स्वागत-सत्कार किया जाना।

(*iv*) घर के किसी सदस्य द्वारा पानी लाना, हाथ-पाँव धुलवाने का प्रबंध करना।

9. कविता में कवि ने आकाश में बादल और गाँव में मेहमान (दामाद) के आने का जो रोचक वर्णन किया है, उसे लिखिए।

उत्तर गाँव में मेघ रूपी शहरी मेहमान आने से गाँव में उल्लास-सा छा गया। बादलों के आने की सूचना देती शीतल बयार चलने लगी। आँधी के आने से गलियों में धूल उड़ने लगी, मानो कोई लड़की घाघरा उठाए भाग रही है। पेड़ तेज हवा में झूमने लगे। बूढ़े पेड़ की डालियाँ झुकने लगीं जैसे मेघ रूपी मेहमान का स्वागत कर रही है। लताएँ पेड़ों की ओट में छिपने लगी मानो लता रूपी नवविवाहिता दरवाजे की ओर छिपकर मेहमान को देख रही हो। घर का कोई सदस्य (तालाब) थाल में पानी भर लाया। बिजली चमकने लगी तथा पूरा गाँव खुशी में डूब गया।

10. काव्य-सौंदर्य लिखिए—

पाहुन ज्यों आए हों गाँव में शहर के।

मेघ आए बड़े बन-ठन के सँवर के।

उत्तर काव्य-सौंदर्य—

भाव-सौंदर्य—गाँव में मेघ रूपी बादलों के आने का सजीव चित्रण किया गया है।

शिल्प-सौंदर्य—• भाषा आम-बोलचाल के शब्दों से युक्त है जिसमें चित्रात्मकता है।

- सजे-धजे मेहमान द्वारा बादलों को उपमानित करने से उत्प्रेक्षा अलंकार है।
- मेघ आए बड़े बन-ठन के सँवर के—मानवीकरण एवं अनुप्रास अलंकार है।

रचना और अभिव्यक्ति

11. वर्षा के आने पर अपने आसपास के वातावरण में हुए परिवर्तनों को ध्यान से देखकर एक अनुच्छेद लिखिए।

उत्तर वर्षा ऋतु में वर्षा होने से पहले आसमान काले-काले बादलों से भर जाता है। शीतल हवा चलने लगती है। कभी-कभी तेज आँधी भी आती है जो आसपास की वस्तुओं और धूल को उड़ा ले जाती है। धूप गायब हो जाती है। घर के लोग बाहर पड़ी वस्तुएँ उठाने लगते हैं। पक्षी अपने घोंसलों की ओर लौटने लगते हैं। लोग अपने-अपने घरों में चले जाते हैं। वर्षा होते ही बच्चे पानी में नाव तैराते हुए खेलने लगते हैं तथा किसान खेतों की ओर निकल जाते हैं।

12. कवि ने पीपल को ही बड़ा बुजुर्ग क्यों कहा है? पता लगाइए।

उत्तर कवि ने पीपल को ही बुजुर्ग इसलिए माना है क्योंकि पीपल का पेड़ आकार में काफी बड़ा तथा पुराना होता है। यह गाँव के लिए साफ हवा देने के अलावा कल्याणकारी भी होता है।

13. कविता में मेघ को 'पाहुन' के रूप में चित्रित किया गया है। हमारे यहाँ अतिथि (दामाद) को विशेष महत्त्व प्राप्त है, लेकिन आज इस परंपरा में परिवर्तन आया है। आपको इसका क्या कारण नज़र आता है, लिखिए।

उत्तर मेहमान के आने पर उसका स्वागत किया जाता है पर उस तरह नहीं जैसा पहले होता था। उसका कारण यह है कि आज लोगों को काम से समय निकाल पाना बड़ा मुश्किल होता है। मेहमान के आने से पहले ही उसकी सूचना फोन आदि के माध्यम से मिल जाती है। अब संचार के साधन विकसित हो गए हैं, इसलिए उसके आने का सालभर इंतजार नहीं करना पड़ता है। बार-बार आने वाले मेहमान के स्वागत में अब उतना उल्लास नहीं रह जाता है।

भाषा-अध्ययन

14. कविता में आए मुहावरों को छाँटकर अपने वाक्यों में प्रयुक्त कीजिए।

उत्तर

कविता में आए मुहावरे	वाक्य-प्रयोग
(*i*) **सुधि लेना** (याद करना)	तुम काम में इतने डूबे रहते हो कि माँ की **सुधि लेने** की भी फुर्सत नहीं रह गई है।
(*ii*) **गाँठ खुलना** (मन का मैल दूर होना)	तुम्हारी बातें सुनकर मेरे मन की **गाँठ खुल गई।**
(*iii*) **बाँध टूटना** (धैर्य समाप्त होना)	देखो अपने सब्र का **बाँध न टूटने** दो, यही परिवार के लिए ठीक होगा।
(*iv*) **बन-ठन के आना** (सज-सँवरकर आना)	शादी में मेहमान **बन-ठन कर** आए हैं।
(*v*) **गरदन उचकाना** (उचक कर देखना)	मेहमान को देखने के लिए लड़कियाँ **गरदन उचकाने** लगीं।

15. कविता में प्रयुक्त आँचलिक शब्दों की सूची बनाइए।

उत्तर **कविता में प्रयुक्त आँचलिक शब्द—**

बन-ठन, बयार, पाहुन, घाघरा, बाँकी, जुहार, किवार, ओट, घूँघट, परात, बरस, लीन्हीं, ढरके आदि।

16. 'मेघ आए' कविता की भाषा सरल और सहज है—उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर 'मेघ आए' कविता की भाषा प्रवाहमयी, चित्रात्मक, सरल और सजीव है। इसमें शब्दों की क्लिष्टता और जटिलता नहीं है। कवि ने अपनी बात को लोक भाषा में कह दिया है; जैसे—'मेघ आए बड़े बन-ठन के सँवर के।' कविता में आँचलिक शब्दों की बहुलता है। तत्सम शब्द बस नाम मात्र के हैं। जो हैं भी वे आम बोलचाल में प्रचलित हैं। कविता में संवाद ग्रामीणों की जुबान में ही रखे गए हैं; जैसे—

'बरस बाद सुधि लीन्हीं' तथा 'क्षमा करो गाँठ खुल गई अब भरम की।'
इस प्रकार हम कह सकते हैं कि इस कविता की भाषा सरल और सहज है।

कुछ और प्रश्न

I. लघु उत्तरीय प्रश्न

1. मेघ के आने की तुलना पाहुन से क्यों की गई हैं?

उत्तर गर्मी के महीने में लोग गर्मी के प्रभाव से व्याकुल हो उठते हैं। वे गर्मी से छुटकारा पाने के लिए वर्षा का इंतजार करते हैं। किसान भी फसल की बुवाई के लिए वर्षा लाने वाले बादलों का इंतजार करते हैं। इसी प्रकार पाहुन (दामाद) का इंतजार भी उसकी सुसराल में किया जाता है। दोनों की ही बेचैनी से प्रतीक्षा की जाती है इसलिए मेघ की तुलना पाहुन से की गई है।

2. 'पाहुन ज्यों आए हों गाँव में शहर के' का आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर गाँव में मेघ रूपी पाहुन का बेचैनी से इंतजार किया जाता है। यहाँ की और शहर के रहन-सहन तथा संस्कृति में अंतर होता है। शहर में लोग भले ही अन्य लोगों से कम आत्मीयता से मिलते हों पर गाँव के लोग, सज-धजकर आए शहरी पाहुन (मेघ) का स्वागत करते हैं।

3. मेघ के आने पर पेड़ अपनी ख़ुशी किस तरह प्रकट कर रहे थे?

उत्तर मेघ के आने की खबर लेकर जब बयार पेड़ों के पास से गुजरी तो वे बहुत ही खुश हुए। पेड़ अपनी गरदन उचकाकर मेघ को देखने की कोशिश करने लगे। बूढ़े पीपल ने आगे बढ़कर मेघ का स्वागत किया। मेघ के आने से पेड़ अपनी डालियाँ हिला-हिलाकर ख़ुशी प्रकट करने लगे।

4. मेघ को नदी ने किस तरह देखा?

उत्तर मेघ के सज-धजकर आने की सूचना नदी को बयार द्वारा मिल चुकी थी। यह खबर सुनकर नदी पहले थोड़ा रुकी। उसने भारतीय नारी की भाँति अपने चेहरे से घूँघट थोड़ा-सा हटाया और सलज्ज नेत्रों की तिरछी नजर से मेघ रूपी मेहमान को देखा।

5. मेघ का स्वागत तालाब ने किस तरह किया? ऐसा करके उसने किस भारतीय परंपरा का निर्वाह किया?

उत्तर मेघ का आगमन सुनकर तालाब बहुत हर्षित हुआ। वह ख़ुशी-ख़ुशी परात में पानी भर लाया ताकि मेहमान के पैर धो सके। ऐसा करके तालाब ने उस भारतीय परंपरा का निर्वाह किया, जिसके अनुसार मेहमान के आने पर पैर धोने की परंपरा है।

II. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. कवि ने लता का मानवीकरण किस रूप में किया है? वह दरवाजे के ओट में क्यों खड़ी हो जाती है?

उत्तर कवि ने लता का मानवीकरण नवविवाहिता के रूप में किया है जो साल भर से अपने प्रिय के आने का इंतजार कर रही है। मेघ रूपी मेहमान (पति) के आने पर लता दरवाजे की ओट में इसलिए खड़ी हो जाती है क्योंकि वह बड़े-बूढ़ों के होते हुए मेघ (अपने पति) के सामने जाने में शर्म महसूस करती है। इतने समय से न मिल पाने के कारण उसमें व्याकुलता है। उसे मेघ से नाराजगी भी है क्योंकि वह साल भर इंतजार करवाने के बाद आया है। वह मिलने के लिए आतुर भी है, इसलिए वह दरवाजे की ओट में खड़ी होती है जिससे अपने पति (मेघ) को देख सके।

2. 'मिलन के अश्रु ढरके' के माध्यम से कवि ने क्या कहना चाहा है?

उत्तर गर्मी की मार से मनुष्य, पशु-पक्षी सभी वर्षा होने का बेचैनी से इंतजार कर रहे थे, पर वर्षा में विलंब होता देख सभी के मन में भ्रम की स्थिति बन गई थी कि इस साल वर्षा होगी भी या नहीं। इस इंतजार के बाद जब बादल आए तो विरह व्याकुल लता ने बादल (मेघ) को उलाहने दिए, शिकवे-शिकायतें कीं। गिले-शिकवे दूर हुए। दोनों के मिलन से उनकी आँखों से ख़ुशी के आँसू बह निकले। वे अपनी ख़ुशी न छिपा सके अर्थात् वर्षा होने लगी और ख़ुशी का संचार हो उठा।

रचनात्मक मूल्यांकन

क्रियाकलाप 1. परिचर्चा का आयोजन।

विषय– आज के परिवेश में 'अतिथि देवो भव' की प्रासंगिकता

उद्देश्य–
- छात्रों में आदर-सत्कार की भावना पैदा करना।
- भारतीय संस्कृति से परिचय कराना।
- वाचन-कौशल बढ़ाना।

प्रक्रिया–
- अध्यापक छात्रों को अतिथि सत्कार संस्कृति से परिचित कराएँगे।
- छात्रों को दो समूहों में बाँट दिया जाएगा–एक समूह गाँव के संदर्भ में तथा दूसरा शहर के संदर्भ में बोलेगा।
- प्रत्येक छात्र को चार-पाँच वाक्य बोलना है।

मूल्यांकन के आधार बिंदु–

विषय की जानकारी	–	2 अंक
तार्किकता	–	2 अंक
सही उच्चारण/प्रस्तुतीकरण	–	1 अंक

क्रियाकलाप 2. दिए गए चित्र के आधार पर संक्षिप्त कहानी और उसका शीर्षक लिखना।

उद्देश्य–
- सृजनात्मक क्षमता का विकास करना।
- रचनात्मक लेखन को प्रोत्साहित करना।
- कल्पनाशीलता को बढ़ाना।

प्रक्रिया–
- अध्यापक नीचे दिए चित्र को ध्यानपूर्वक देखने के लिए प्रेरित करेंगे।
- दस मिनट सोचने तथा बीस मिनट लिखने का समय देंगे।
- चित्र के दृश्यों को अध्यापक स्पष्ट करेंगे।

मूल्यांकन के आधार बिंदु–

विषय-वस्तु से संबद्धता	–	2 अंक
भाषिक शुद्धता	–	1 अंक
कल्पनाशीलता	–	1 अंक
मौलिकता	–	1 अंक